सं. श्रो.वि./एफ.डो/58-86/19049.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज विविध पोली पैकेजिंग 14/7, मधुरा रोए, फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री राम किशन मार्फत राष्ट्रीय मजदूर संघेष यूनियन (रजि०), प्लॉट नं० ए-408, टूल रूम ट्रेनिंग सैंस्टर के सामने श्रीधोगिक क्षेत्र, दिल्ली-110052 तथा उसके श्रवन्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिपित भामसे में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रन, ग्रीशोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के राज्य (ग) द्वारा प्रदान की वर्द धिनितयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भ्रधिसूचना सं० 5415-3-धम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुये मिधसूचना सं. 11495-जी-भम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की र्यारा 7 के भ्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीशबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनणैय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रधन्धकों तथा खिमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भ्रभवा संबंधित नामला है:—

क्या श्री राम किशन की सेक्षाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हुकदार है ?

## दिनांक 12 जून, 1986

सं. भो.वि./पानी/46-86/19787.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मार्किट कमेटी, धरोंडा, जिला करनाल, के श्रमिक श्री पबन कुमार मार्फत श्री मुकन्द लाल चानना, 38-ए, श्रीतम नगर, करनाल, तथा उसके प्रबन्धकों के दीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदांगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रज, भौद्योगिक विवाद भिधितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई गिम्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भिधितूचना सं. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1985, द्वारा उक्त भिधितूचना की धारा 7 के भधीन गिठत भभ न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादमस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायितिणैय एवं पंचाट तीन भास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा भिम्क के बीच या तो विवादमस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित भामला हैं:---

क्या श्री पवन कुमार, पृष्ठ श्री महाबीर प्रसाद की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं. तो यह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो० वि०/यमुना/59-86/19825.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं सरदाना पटर्ज, प्रा. िस. (यमना गैसिज सरदाना नगर) ग्रस्वाला रोड, जगाधरी, के श्रमिक श्री ग्ररिवन्द्र कुमार, पुत श्री क्षमल किशोर, मार्फत डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा, उन्टक ग्राफिस, धर्मशाला बाहमणान, जगाधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 3 (44) 84—3—अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विधाद-ग्रस्त मामला है या दिवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री ग्ररविन्द्र कुमार की सेक्शमों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 13 जून, 1986

सं० ग्रो॰वि॰ |पानी/45-86/19868.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ दी सहकारी ऋण एवं सेवा समिति लि॰ चोंचड़ा, तहसील ग्रसन्ध, जिला करनाल के श्रमिक श्री गंगा दत, पुत्र श्री रामेश्वर दत ग्राम चोचड़ा, तहसील ग्रसन्ध, जिला करनाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णंग हेतु निर्दिष्ट धरना बांछनीय समझ ते हैं;

असिना, ग्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, कीधारा 10 की उपधारा (1) के थण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गर्द मक्तियों का प्रयोग करते हुये हरिमाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 3(44)84-3-ध्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1985 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायितर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री गंगा दत, सुपुत्र श्री रामेश्वर दत की सेवाशों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० स्रो० वि०/पानी/49-86/19930.— च्ंिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है (1) हरियाणा स्टेट हैण्डलूम एण्ड हैण्डीकापट कारगेरेशन, एस.सी.स्रो. 147-48, सैक्टर-17, चण्डीगढ़ (2) परियोजना अधिकारी, हरियाणा स्टेट हैण्डलूम एण्ड हैण्डीकाप्ट कारपोरेशन पानीपत, के श्रमिक श्रीमित सरोज बाला, मार्फत श्री नन्द लाल चक्की वाला हरिबांग कालोनी, पानीपत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यामनिर्णम हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लियें, श्रव, श्रीचोगिक विवाद श्रिष्ठित्यम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिष्ठिब्बना सं० 3(44)84—3—श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1985 द्वारा उक्त श्रिष्ठसूचना की धारा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिण्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेतृ निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्याश्रीमित सरोज बाला की सेवाग्रों की समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं शो० वि०/यमुना/60-86/19950 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं । सरदाना बर्द्य प्रा०लि० (यमुना गैसिस सरदाना नगर) ग्रम्बाला रोड़, जगाधरी के श्रमिक श्री सूरज प्रकाण, पुत्रं श्री कैलाश चन्द, मार्फत डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मी, इंटक ग्राफिस धर्मशाला ब्राह्मण, रेलवे रोड़, जगाधरी, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौजोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्वायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीकोगिक विवाद ग्रुविनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1985 द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एव पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

न्या श्री सूरज प्रकाश की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तया ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राइत का हकदार है ?

सं श्रो विव विम्ता / 58-86 / 19956. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं श्र सरदाना ब्रह्म प्राव्व लिल (यमुना गैसिस सरदाना नगर) श्रम्बाला रोड जगाधरी के श्रमिक श्री जयपाल सिंह, पूत्र श्री विलोक सिंह मार्फत डाव् सुरेन्द्र कुमार शर्मा, इंटक श्रौफिस धर्मशाला ब्राह्मण, रेलवे रोड, जगाधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायतिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हैं;

इस लिये, अब, भौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना संक-3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1985 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करने हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री जयपालसिंह, पुत्र श्री विलोकसिंह की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीय है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है,?